
Svarajyanubhavaḥ

स्वाराज्यानुभवः

Document Information

Text title : Svarajyanubhavaḥ

File name : svArAjyAnubhavaH.itx

Category : raama, rAmAnanda

Location : doc_raama

Author : bhagavadAchArya

Proofread by : Mrityunjay Pandey

Latest update : February 16, 2024

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

February 16, 2024

sanskritdocuments.org

Svarajyanubhavaḥ

स्वाराज्यानुभवः



यन्द्रच्छायापलरएापटोः सौष्यमाधुर्यधाम्नः

सन्तमानां परमसुभटैः श्रीमतो राघवस्य ।

शीतैः स्वच्छैर्मधुरमधुरैर्डास्यरूपप्रवाडै-

रारात्तिष्ठन्निधिगतसुभः कलमषं क्षालयामि ॥ १ ॥

यन्द्रमा से भी अधिक सुन्दर, सुभ और मधुरता के धाम, श्रीमद्राघव के उस डास्यरूप सरयू के प्रवाल से, समीप में बैठा हुआ मैं अपने पापों को धो रहा हूँ जो कि त्रिविध तापों से सन्तप्त येतनों के लिये परमसुभ प्रदाता है, स्वच्छ है और मधुरतम है ॥ १ ॥

कश्चिद्गुणात्तटमधिवसन् पापपुञ्जं विमुञ्चन्,

सत्सर्मादीन्विदधदपरो निर्मलत्वं प्रयाति ।

शोभां पश्यन्मधुरवचनस्येन्दुकान्ताननस्य,

क्षीणं कुर्वे दुरितमपिलं स्वस्य सीतासभस्य ॥ २ ॥

कोई गुणा तट पर निवास करता हुआ और कोई उत्तम कर्मों को करता हुआ निर्मल बनता है, परन्तु मैं मधुरभाषी, यन्द्रसमान मुभवाले, सीतानाथ भगवान् श्रीराम की शोभा को देखता हुआ अपना समस्त पाप धो रहा हूँ ॥ २ ॥

कश्चिद्गीतां पठति सततं प्रातरुत्थाय नित्यं,

वेदान् कश्चित्पठति सुतरामात्मनिश्चयसाय ।

शोभासिन्धोः शुभगुणानिधेः श्रीमतो राघवेन्द्रो-

निर्व्याजं मे रटति रसना नाम कामं ललामम् ॥ ३ ॥

कोई तो प्रतिदिन प्रातः उठकर आत्मकल्याण के लिये गीता का पाठ करता है और कोई नित्य वेदाध्ययन करता है और मेरी शुभ शोभाधाम, अभिलेख प्रत्यनीक गुणगण मंडित श्रीसीतापति राम के सुन्दर नाम को शुद्ध भाव से निरन्तर रट रही है ॥ ३ ॥

दीनोद्धारप्रतिष्ठतगतेः सर्वकल्याणधाम्नो,

रम्याभोजोपमितवपुषो राघवाम्भोजमानोः ।

कान्तं शान्तं सरसमनघं सर्वसञ्चित्तहारी,
लक्ष्यं यत्तन्मृदुनि वदने मार्दवं शं तनोति ॥ ४ ॥

दीनोद्धार परायण, सर्वकल्याण निकेतन, सुन्दरकमल कोमलकाय, रघुकुलकमल द्विवाकर श्रीराम के मुग्ध पर कान्त, शान्त, सरस, निर्दोष और सत्पुरुषों के चित्त को डराने करने वाली जो मृदुता दीप्ति होती है वह मेरा कल्याण कर रही है ॥ ४ ॥

संसाराम्भः पटलकुटिलोत्तुङ्गारिङ्गतरङ्गै-
निष्कारण्यं प्रतिपलमलं ताड्यमानं मनो मे ।
चिन्तायकोन्मथितमभितः क्वथ्यमानं विपद्भि-
र्दन्तज्योती रथयतितमां रामभद्रस्य शान्तम् ॥ ५ ॥

संसारसागर के कुटिल और अड-अड-उठते डुअे तरङ्गों से प्रतिक्षण मेरा मन अत्यन्त निर्दयता के साथ मारा जा रहा है, अनेक विपत्तियों से उबाला जा रहा है, चिन्ता यकड़प मथानी से मथा गया है । जैसे मेरे मन को भगवान् श्रीराम के दौंतों का प्रकाश अत्यन्त शान्त कर रहा है ॥ ५ ॥

शान्ते शून्ये लृद्यपटले दुर्बले मे विनम्रे,
पापापारोदकनिधिसरद्विप्रतीसारतापम् ।
कुल्लाम्भोजामलदलदृशः श्रीमतो राघवस्य,
लृद्यः सद्यः शमयतितमां दृष्टिकोणावपातः ॥ ६ ॥

मेरे शान्त, शून्य, दुर्बल और विनम्र लृद्यपटल में मेरे पापों के अपारसमुद्र- में से उत्पन्न डुअे पश्चात्ताप रूप अग्नि को, पिले डुअे कमल के निर्मलदल प्रमान नेत्रों वाले भगवान् श्रीराम का मनोहर कृपा कटाक्षपात तत्काल ही शान्त कर रहा है ॥ ६ ॥

॥ छति श्री परमहंस परित्प्राजक जगद्गुरु रामानवाचार्य स्वामिश्री भगवदाचार्यमहाराजैः १८७६ तमे विक्रमसम्बत्सरे प्रणीतः ॥

Encoded and proofread by Mrityunjay Pandey

Svarajyanubhavaḥ

pdf was typeset on February 16, 2024

Please send corrections to sanskrit@cheerful.com

